प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में वैदिक वांङ्मय का संक्षिप्त परिचय, वेदों का महत्व, विभाजन एवं रचनाकाल तथा वेदाङ्ग साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

द्वितीय अध्याय में वैदिक नारी का सामाजिक जीवन के अन्तर्गत नारी माता के रूप में, पुत्री के रूप में, पत्नी, वहिन, वधू के रूप में वर्णन के साथ-साथ स्वैरिणी, परित्यक्ता, स्त्री सम्पत्ति-अधिकार आदि महत्वपूर्ण विषयों को प्रस्तुत शोध में विवेचित किया गया है।

तृतीय अध्याय में वैदिक नारी एवं तत्सम्बन्धित षोडश संस्कारों का वर्णन विवेचित है।

चतुर्थ अध्याय में वैदिक नारी की राजनैतिक महत्ता के अन्तर्गत उसकी युद्ध में सहभागिता, स्वराज्य की भावना, महिषी, न्यायकत्री के रूप में विवेचन हुआ है।

पञ्चम अध्याय में वैदिक नारी के धार्मिक जीवन के समस्त पहलुओं का बहुलता से वर्णन प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में किया गया है।

षष्ठ अध्याय में वैदिक नारी का आर्थिक जीवन के अन्तर्गत कृषि, पशुपालन, वस्त्र उद्योग आदि का प्रकाश डाला गया है।

सप्तम अध्याय में वैदिक नारी और शिक्षा को प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में विवेच्य विषय बनाया गया है।

उपसंहार के अन्तर्गत शोध की प्रमुख उपलब्धियों एवं वैशिष्ट्यों का वर्णन प्रस्तुत है। शोध-प्रबन्ध के अन्त में सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची दी गयी है।

आर्यकन्या महाविद्यालय झाँसी की विभागाध्यक्षा गुरुवर्या श्रीमती डॉ. अंजू दत्त जी ने व्यस्त होने पर भी मेरी शोध विषयक गुत्थियों को सुलझाने में जो अभिरूचि दिखायी वह मेरे लिये कल्पनातीत थी। उनकी सतत् प्रेरणा, सहयोग, बहुमूल्य सन्निर्देश और पुत्रीवत स्नेह देने की जो कृपा की एवं सम्प्रति शुभाशीष देकर कृतार्थ किया उसका ही परिणाम है कि यह शोध कार्य पूर्ण हो सका। एतदर्थ मैं उनके प्रति आजीवन ऋणी हूँ।

मथुरा प्रसाद महाविद्यालय के प्राचार्य, गुरूजनों एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. टी. आर. निरंजन का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस शोध कार्य को सफलीभूत बनाया एतदर्थ उन सबका मैं आजीवन ऋणी रहूँगी।

मेरे भविष्य के प्रति सदैव चिन्तित रहने वाली पूज्यनीय माताजी श्रीमती सावित्री देवी एवं वाल्यकाल से ही संस्कृत अध्ययन, मनन, अजस्र प्रेरणा प्रदान करने वाले परम पूज्य पिताजी श्री रामरतन अग्रवाल (दतिया वाले) जी का वात्सल्य स्नेह एवं उत्साहवर्धन स्मरणीय ही नहीं वरन स्तुत्य है। वस्तुतः शोध-प्रबन्ध उन्ही के संकल्प, प्रेरणा एवं आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। साथ ही साथ मैं अपने समस्त परिवार के बन्धुजनों की भी आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर शोध-कार्य में सहयोग किया।

मथुरा प्रसाद महाविद्यालय के पुस्तकालय अधीक्षक श्री नरेश चन्द्र द्विवेदी से मिले पुस्तकीय सहयोग का भी मैं आभारी हूँ।

कम्प्यूटर द्वारा प्रिंट करके शोध-प्रबन्ध को स्वच्छ और सुन्दर रूप देने में मेरी मदद मु. जियाउर्रहमान अंसारी (गुड्डू) महक कम्प्यूटर्स, बजरिया उरई ने की। उनके बिना शोध-प्रबन्ध अधूरा ही रह जाता एतदर्थ आभारी हूँ।

अन्त में श्री गणेश जी की महती कृपा थी जो कि शोध प्रबन्ध निर्विघ्न समाप्त हुआ अन्यथा मुझमें इतनी सामर्थ्य कहाँ।

मुझे पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि नीर-क्षीर विवेक रखने वाले परीक्षकगण प्रमादवश हुयी अपरिहार्य त्रुटियों की ओर ध्यान न देते हुये इस शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन करेंगे।

स्वराज्यमणि अग्रवाल

गणेश चतुर्थी — विनयावनत

24-12-06 — कु. स्वराज्यमणि अग्रवाल